विलेज ऑफ पेंटर्स फ्रैंक जे. कोरोम की रचना है। यह पश्चिम बंगाल के नाया गांव के घुमंतू लोक कलाकारों की कहानी है। इस किताब को अमेरिका के न्यू मेक्सिको राज्य के सैंटा फे स्थित अंतरराष्ट्रीय लोक कला संग्रहालय में लगी एक प्रदर्शनी में रखा गया है। प्रदर्शनी इस साल अक्टूबर में शुरू हुई थी और अगले साल अप्रैल तक चलेगी। नाया गांव के इन लोक कलाकारों को पतुआ कहा जाता है। ये कई तरह की आकर्षक स्क्रॉल पेंटिंग्स बनाते हैं और इन्हें किसी को दिखाने के दौरान अपनी विशिष्ट शैली में गीत गाते हैं। प्रदर्शनी में पॉल स्मुट्को के चित्र भी शामिल हैं। किताब में छपी सौ से ज्यादा पेंटिंग्स आज के हालात को सामने लाती हैं। इनमें आतंकवाद, एचआईवी-एड्स से बचाव, विभिन्न समुदायों के लोगों के बीच संवाद और वैश्वीकरण जैसे विषय शामिल हैं। *विलेज ऑफ पेंटर्स* कला की विविधता और इसके लगातार संवरने के पक्ष को सामने लाती है।

साभार: इंटरनेशनल फोक आर्ट फाउंडेशन कलेक्शन, म्यूजियम ऑफ इंटरनेशनल फोक आर्ट, सैंटा फे, न्यू मेक्सिको

एलिस आइलैंड कैफे कोलकाता में एक अमेरिकी कॉफी शॉप का अनुभव लेकर आया है। यहां स्थित अमेरिकन सेंटर में 21 अगस्त को इसका शुभारंभ हुआ। इस कैफे के डिजाइन का चयन पश्चिम बंगाल के वास्तुकला के छात्रों की एक प्रतियोगिता के जरिए किया गया। इस स्पर्धा में बंगाल इंजीनियरिंग एंड साइंस यूनिवर्सिटी के छात्रों ने बाजी मारी।

समाचार गुलदस्ता

सौरभ दत्त © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

अमेरिका के दक्षिण एवं मध्य एशियाई मामलों के सहायक विदेश मंत्री रिचर्ड बाउचर अगस्त में पांच दिन की भारत यात्रा पर थे। इस दौरान उन्होंने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के नजदीक स्थित सलाम बालक ट्रस्ट के संपर्क केंद्र और लड़कों के लिए बनाए गए आश्रय का दौरा किया। इस परियोजना को यूएस एड द्वारा फैमिली हेल्थ इंटरनेशनल के माध्यम से सहायता दी जा रही है। इसके तहत अनाथ बच्चों को भोजन, चिकित्सा सुविधा और शिक्षा मुहैया कराई जाती है। बाउचर ने इन अनाथ बच्चों के हालात को करीब से जानने के लिए रेलवे स्टेशन का दौरा भी किया, जहां कि ये बच्चे रहते हैं। अपनी यात्रा के दौरान वह अमेरिकन सेंटर में 150 युवाओं से भी मिले और उन्होंने भारत-अमेरिकी परमाणु सहयोग के प्रयासों से लेकर विश्व व्यापार तक के बारे में इनके सवालों के जवाब दिए। उन्होंने दिल्ली और कोलकाता में भारत के उद्यमियों को भी संबोधित किया।

ए.पी.एस. विजेंद्र

मनोज एल. पंजाबी

पचास साल की इंद्रा के. नूयी को दुनिया की सबसे बड़ी खाद्य एवम शीतलपेय कंपनी पेप्सिको का नया सीईओ बनाया गया है। वह 1 अक्टूबर को अपना नया पदभार ग्रहण करेंगी और स्टीव रीनमंड का स्थान लेंगी। वर्ष 2000 में लिए गए एक फोटो में वह स्टीव के साथ नजर आ रही हैं। चेन्नई में पैदा हुई इंद्रा को फोर्ब्स पत्रिका ने सितंबर में दुनिया की चौथी सबसे ताकतवर महिला के खिताब से नवाजा है। वह 1994 में पेप्सिको में आईं और वर्ष 2001 से वह इसकी प्रेजिडेंट और सीएफओ थीं। नूयी ने येल विश्वविद्यालय, आईआईएम, कोलकाता और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से अपनी डिग्रियां हासिल कीं। उन्होंने बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप और मोटोरोला में भी काम किया।

स्टुअर्ट रैमसन © ए.पी. - डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

ए.पी.एस. विनीत

मद्रास विश्वविद्यालय का सीनेट हाउस कभी सम्मेलनों और प्रदर्शनियों के लिए एक लोकप्रिय जगह के तौर पर जाना जाता था। लेकिन समय की मार से और देखरेख के अभाव में यह जर्जर हालत में पहुंच गया। अमेरिकी सरकार की आंशिक आर्थिक मदद से इसका जीर्णोद्धार किया गया और इस 4 सितंबर को राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने इसका उद्घाटन किया। अमेरिकी दूतावास, नई दिल्ली के जनसंपर्क विभाग द्वारा मुहैया कराए गए 35 हजार डॉलर से ज्यादा के संघीय सहायता अवार्ड के जरिए छत के चार पैनलों का जीर्णोद्धार किया गया और ग्रेट हॉल में 17 पैनल नए सिरे से बनाए गए। कांच की विशिष्ट खिड़कियों, भित्तिचित्रों, पेंटेड पैनल्स और बालकनी की दिलकश रेलिंग्स के साथ उम्मीद है कि यह ऐतिहासिक इमारत एक बार फिर यूनिवर्सिटी की कैंपस लाइफ का मुख्य आकर्षण और सार्वजनिक समारोहों का मुख्य केन्द्र बन जाएगी।

डायरिया से बच्चों की बड़े पैमाने पर होने वाली मौतों के बारे में चेतना जगाने के लिए 29 जुलाई को भारत के 32 शहरों में रैलियां निकाली गईं। इनमें करीब पांच लाख लोगों ने हिस्सा लिया। चित्र में इंदौर, मध्य प्रदेश में निकाली गई रैली का दृश्य नजर आ रहा है। इस चेतना अभियान का आयोजन यूएस एड और आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड ने राष्ट्रीय ओआरएस दिवस मनाने के लिए किया। अगर कोई व्यक्ति डायरिया से पीड़ित हो तो वह ओआरएस का घोल लेकर शरीर में हुई तरल पदार्थों की कमी को पूरा कर सकता है। यह ग्लूकोज, नमक, पोटेशियम क्लोराइड और ट्राई सोडियम साइट्रेट का मिश्रण होता है। उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में इस मुहिम में छात्रों, उनके अभिभावकों, डॉक्टरों और स्वयंसेवी संगठनों ने हिस्सा लिया। डायरिया से शरीर में होने वाली तरल पदार्थों की कमी के कारण भारत में हर साल पांच लाख से ज्यादा बच्चे दम तोड़ देते हैं।

संजीव व्यास, पीआरसी वन